छायावादी कवियों की राष्ट्रीय सामाजिक चेतना

छायावादी कविता का काल सन् 1920 से 1936 ई. तक माना जाता है। यह वह समय था जब देश में गांधीजी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाया जा रहा था और प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्वतन्त्रता एवं राष्ट्रीयता की भावनाएं विद्यमान थीं। प्रसाद जी ने अपने नाटकों—चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की तथा भारत के अतीत गौरव का गान किया। प्रसादजी ने 'बीती विभावरी' में किसी नायिका को जगाने का ही प्रयास नहीं किया अपितु सम्पूर्ण देश को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में राष्ट्रीयता अपने चरम शिखर पर है। कार्नेलिया भारत को अपना देश मानते हुए उसकी प्रशंसा इन शब्दों में करती है :

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

Scanned with CamScanner

प्रसाद जी के काव्य संकलन 'लहर' में संकलित कविता **'पेशोला की प्रतिध्वनि'** राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है।

छायावादी कवियों में राष्ट्रीयता की सर्वाधिक प्रखर भावना निराला में दिखाई पड़ती है। **'जागो फिर एक बार'** कविता में निराला ने भारत की उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है जो परतन्त्रता की गहरी नींद में सोई पड़ी हैं।

जागो फिर एक बार!
पशु नहीं वीर तुम समर शूर क्रूर नहीं
काल-चक्र में हो दबे आज तुम राजकुंवर, समर सरताज।

राष्ट्र-प्रेम के ओजस्वी भावों से ओतप्रोत होकर कविवर निराला ने भारत माता के उस साकार रूप की वन्दना की है जिसके पदतल में लंका शतदल (कमल) की भांति सुशोभित है और जिसके चरणों को सागर की उत्ताल लहरें धोती रहती हैं:

भारति जय विजय करे
कनक शस्य कमल धरे।
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे।

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा भी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर अपने गीतों में राष्ट्र को उद्‌बोधन देती हुई कह उठती हैं :

चिर सजग आंखें उनीदीं
आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना॥

राष्ट्रीयता की भावना के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं को भी छायावाद में अभिव्यक्त किया गया। निराला जी ने सामाजिक विषमता को चिह्नित करने वाली कविताओं में क्रान्ति का आह्वान किया और शोषण का हर स्तर पर विरोध किया।

निराला जब उस भिक्षुक को देखते हैं जो जूठी पत्तलें चाट रहा है तब उनका मन विद्रोह से भर उठता है :

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए॥

पूंजीपतियों के प्रति घृणा की अभिव्यक्ति निराला की कविताओं में इसलिए दिखाई पड़ती है, क्योंकि वे सामाजिक विषमता से पीड़ित थे। **'कुकुरमुत्ता'** नामक कविता में वे पूंजीपति वर्ग के प्रतीक 'गुलाब' को फटकारते हुए कहते हैं :

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।

Scanned with CamScanner

दलितों एवं दीनों के प्रति सहानुभूति रखने वाले निराला समाज में समरसता स्थापित करने के पक्षधर थे। वे समाज के सभी कष्टों का मूल कारण इस विषमता को ही मानते हैं।

कविवर सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में भी प्रगतिवादी स्वर विद्यमान है। वे भी सामाजिक समता के पक्षधर हैं। '**ताज**' नामक कविता में उन्होंने अपनी प्रगतिवादी भावना का परिचय देते हुए कहा है कि जब समाज में भूखे, नंगे, आवासविहीन लोग हों तब ताजमहल जैसे भवन का निर्माण नहीं कराना चाहिए :

हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन
जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।

सामूहिक विकास के लिए पंतजी जहां मार्क्सवादी विचारधारा का समर्थन करते हैं, वहीं वैयक्तिक विकास के लिए गांधीवाद को उचित मानते हैं। 'युगवाणी' में इन दोनों विचारधाराओं से प्रभावित रचनाएं संकलित हैं। 'युगान्त' में कवि ने पुरातन से नष्ट होने का आह्वान किया है :

गा कोकिल बरसा पावक कण।
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन॥

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि छायावादी काव्य में एक ओर तो राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने वाली रचनाएं लिखी गईं तो दूसरी ओर सामाजिक चेतना को परिवर्तित करने का प्रयास किया गया।

Scanned with CamScanner